REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 8 | MAY - 2025

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के इतिहास का अध्ययन

नीलेश निरंजन
(असिस्टेंट प्रो) हिन्दी विभाग, श्री दीपचन्द्र चौधरी महाविद्यालय, ललितपुर, उ. प.

शोध परिचय-

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएँ देखने को मिलती है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री विमर्श का जन्म माना जाता है। श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है स्त्री विमर्श की शुरूआत गुंज पश्चिम में देखने को मिला १९६० ई० के आस-पास नारी के उत्थान के लिए बहुत आन्दोलन चलाये गये, गया भूमि आन्दोलन सबसे पहले महिलाओं को जमीनी मलिकाना हक दिलवाया जो बाकई में प्रसंशनीयथा, वहां से महिलाओं को अपने अधिकार का पता चला तथा अपने हक के लिये आगे आने लगी।

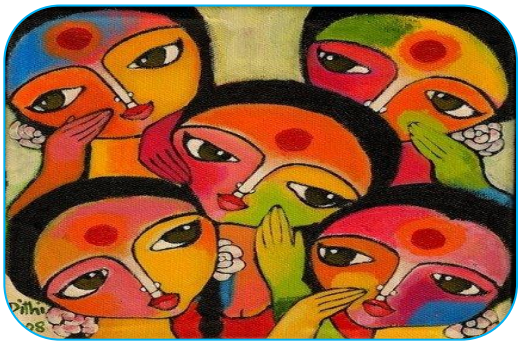

८ वें दशक तक आते-२ यही विषय एक आन्दोलन का रूप ले लिया जो शुरूआती सत्री विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध होता है। स्त्री विमर्श अंग्रेजी के फेमिनिज्म का हिन्दी रूपान्तर है आज महिलाओं को हर स्तर पर समस्या का सामना करना पडता है। विषय चाहे जो भी हो पुरूष हमेशा गिराने में लगे हुये हैं।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि किसी देश की तरक्की केवल एक पक्ष से नहीं है आगे बढ़ने के लिये दोनो पक्षों का होना जरूरी है। स्त्री अध्ययन बहुत चर्चित विषय के रूप में स्थापित हुआ है। नारीवादी विमर्श और उत्तर आधुनिक विमर्श पर विचार करना इसीलिये आवश्यक हो गया, क्योंकि उपभोक्तावाद का दबाव स्त्री पर सर्वाधिक है स्त्री मुक्ति की बात हो तो हमारा ध्यान २० वीं सदी के अंतिम दो दशकों पर जाता है। उपभोक्तावादी संस्कृति में बाजार के निर्माण और विकास के लिए स्त्री देह का जबरदस्त उपयोग किया है।

सवाल उठाया जाने लगा कि आज दृश्य में सबसे ज्यादा स्त्रियां ही क्यों ? मीडिया विज्ञापनों में स्त्री देह ही क्यों ? वह स्त्री देह का इस्तेमाल क्यों कर रहा है सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि इसे स्त्री या नारीवादी किस दृष्टि से देखती है और इन परिवर्तनों के प्रति पुरूषों का क्या दृष्टिकोण है? अनेक विचारकों का मानना है कि भूमण्डलीय या उपभोक्तावादी संस्कृति स्त्री के विपक्ष में है। यह उसकी अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए खतरनाक है। प्रश्न किया जाता है कि फिर कौन सा समय एवं समाज स्त्री के पक्ष में रहा है तो उत्तर नहीं दे पाते हैं।

स्त्री विमर्श एवं स्त्रियों की समस्याओं को लेकर पुरूषों के पास कोई साफ दृष्टि भी नहीं दिखाई देती है उनका नजरिया नकारात्मक ही होता है।

मुक्त रूप से पुरूष के साथ जीवन के उत्तरदायित्व की सहभागिता के स्थान पर नारी अनेक बन्धनों में लिपटती चली गयी, न केवल उसके जीवन की गतिविधियों को घर की चहारदीवारी में नियंत्रित किया गया, अपितु उसके सहज सृजनशील

मनरूपी पक्षी को भी एक ऐसे पिंजड़े में भले ही वह सोने का क्यों न हो कैद कर लिया गया है पर शक्तिरूपा, स्वरूपा, मातृस्वरूपा नारी की जिजिविषा ने हार नही मानी मुक्ति का उसका संघर्ष अनेक बाधाओं के बाद भी गति से जारी रहा।

बहुत से लेखक लेखिकाओं ने नारी की पीड़ा को साहित्य में उतारा है तथा नारी की उस पीड़ा से मुक्त एवं सशक्त करने के लिए आन्दोलन चलाये हैं भारतीय संविधान में कही हद तक स्त्री को पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त है। परन्तु समाज व परिवार में वह अधिकारों से वंचित रहती है। पैदा होने से या जन्म के समय से ही उसके साथ भेदभाव होना शुरू हो जाता है। उसके सामने बहुत से मापदण्ड रखे जाते हैं उससे कहा जाता है कि ये ना करो, वो न करो, ऐसा ना करो, वैसा न करो जबकि पुरूषों से कुछ नहीं कहा जाता है। उसको धार्मिक रीति रिवाजों का हवाला देकर बहुत सी यातनायें दी जाती है। इन्ही से मुक्त करने तथा उनके अधिकार को देने के सम्बन्ध में इस शोध को किया जा रहा है। इस शोध से पहले भी बहुत शोध हो चुके हैं फिर भी इस विषय पर गहन अध्ययन की जरूरत है।

समस्या का चयनः

सर्वप्रथम शोधार्थी अपने रूचि के अनुसार विषय का चयन अपने मार्गदर्शक के परामर्श से करेगा इसके पश्चात् शोधार्थी विषय का अध्ययन, मनन, चिंतन के उपरान्त एक पूर्वधारणा का निर्माण करेगा। इस क्रम में मैने मार्गदर्शक के परामर्श तथा अपने मनन, चिंतन के उपरांत हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के इतिहास का अध्ययन नामक शीर्ष को अपने शोध कार्य का विषय बनाया है। इस शोध में लोगों का महिलाओं के प्रति स्वभाव में बदलाव जरूर आयेगा।

शोध अध्ययन का उद्देश्य :-

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य नारी की पीड़ा एवं उसको समाज, परिवार, संस्थान, रीति रिवाज तथा पितृसत्ता से मुक्त करने के लिए किया गया है इसके हर एक पहलू पर हम मूल्यांकन करेंगे।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः-

इस शोध का विषय सत्र पर पहले भी कई शोध कार्य सम्पन्न हो चुंके हैं ? बहुत से लेखक एवं लेखिकाओं ने अपने-२ तरीके से नारी लेखन को गति दी है नारी विमर्श पर लिखने वाली कुछ प्रमुख लेखिकाऐं इस प्रकार से है- पंडिता रमाबाई, ताराबाई शिंदे, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, कृष्णा सोवती, प्रभा खेतान आदि।

आज स्त्री विमर्श एक चर्चित शोध विषय बन गया है इस क्षेत्र में नाकि स्त्रियों बल्कि पुरूष भी बढ़चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

इस बात में कोई दो राह नही है कि स्त्री विमर्श में शोध करने वालों की कमी है तो यह बात पूर्णता गलत सिद्ध होगी। शोध जो भी हो चाहे वह किसी भी एक महिला को लेकर हो या फिर पूरी जाति को लेकर हो केन्द्र में महिला ही रहती है। सभी शोध में महिला की पीड़ा एवं यातनाओं को दिखाया गया है उसको उससे मुक्त और सशक्त करने के लिए प्रयास किया है। प्रत्येक शोध से समाज व देश को एक नयी दशा व दिशा मिलती है जिससे लोगों का महिलाओं के प्रति स्वभाव में बदलाव आया है।

'प्रसाद' ने कहा नारी तुम केवल श्रद्धा हो' तो सेक्सपीयर ने दुर्बलता तुम्हारा नाम ही नारी है'' कहकर नारी के अस्तित्व को बताया है। इस शोध का उद्देश्य यही है कि महिलाओं को उनके अधिकार मिले, वो भी पुरूषों के समान खुली हवा ले तथा जो करना है वो कर सके किसी के दबाब में न रहे। इस शोध का करने का सीधा तात्पर्य यही है कि वह किसी भी स्थिति में हो कैसी भी स्थिति में हो महिलायें उससे मुक्त हो।

भारत जैसे देश में स्त्री की पूरी संवैधानिक सुरक्षा तो मिली हुई थी लेकिन पितृसत्तामक समाज के सामंती रवैये में बहुत कम परिवर्तन मिलता है। स्त्रियों के साथ हमेशा से भेद-भाव किया जा रहा है हमारा समाज जैसे-२ सभ्य होता गया लिंग, भेद भी बढ़ता गया। 'एंगेल्स' ने परिवार निजी सम्पत्ति एवं राज्य की उत्पत्ति ग्रंथ में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है जहाँ सभ्यता एक वर्ग को लगभग सारे अधिकार देकर दूसरे वर्ग पर सारे कर्तव्यों का बोध लादकर अधिकारों एवं कर्तव्यों के भेद एवं विरोध को इतना स्पष्ट कर देती कि मूर्ख से मूर्ख प्राणी भी उन्हें समझा सकता है।

शोध प्रविधिः

शोधार्थी द्वारा समस्या के चयन के उपरान्त हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के इतिहास पर लिखी गयी समस्त किताबों का संकलन किया जायेगा तथा उनसे प्राप्त तथ्यों का संकलन हम प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको के तहत अनुसूची, प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि का प्रयोग किया जायेगा तथा इसके अन्तर्गत सभी प्रकाशित पुस्तकों, लेखों, पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया जायेगां

तथ्यों के वर्गीकरण विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों की स्थापना अपने समस्या के चयन के सन्दर्भ में की जायेगी प्राप्त निष्कर्षों के अनुकरण हमारी पूर्वधारणा सत्य या असत्य सिद्ध हो सकती है?

प्रस्तावित शोधकार्य का प्रदेयः

स्त्रियों की पुरानी तस्वीर धुंधली पड़ती जा रही है और बाजार स्त्री की मजबूत तस्वीर गढ़ रहा है आज स्त्रियां हर क्षेत्र में हिस्सा लेने लगी है और पितृसत्ता को खुद तोडने लगी है इस सन्दर्भ में देवेन्द्र इस्सर ने स्त्री मुक्ति के प्रश्न में लिखा है सबसे बड़ा परिवर्तन पुरूषों की मानसिकता में आया बदलाव है उन्होने इसको स्वीकार किया है कि समान अवसर मिलने पर ऐसा कोई काम नही है जो स्त्री न कर सके।

जैसे सोफिया कुरैसी और व्योमीता सिंह ने ऑपरेसन सिंदूर चला कर पाकिस्तान मे आतंकवादियों को मार गिराया।

आज स्त्री विमर्श व स्त्री मुक्ति का जो प्रश्न चल रहा है वह निरूद्देश्य नही है यह एक जटिल एवं ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है राकेश कुमार ने नारीवाद विमर्श में लिखा है स्त्री संघर्ष का एक नया शास्त्र नारी विमर्श विकसित होना भी ऐतिहासिक प्रक्रिया का हिस्सा है। दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, साहित्य जैसे अनेकोनेक ज्ञानुशासन नारी संघर्ष पर नए-नए विमर्श बना रहे हैं इन विमर्शों से हमारे समाज पर असर दिखेगा, हकीकत है बदलाव भी होगा और पुरूषों को भी पूर्वग्रहों से मुक्त होकर स्त्री की बदलती हुई भूमिकों में स्वीकार करना होगा तथा अपने अधिकार की लड़ाई लडती जायेगी।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नारी आदिकाल से ही पीडित एवं शोषित रही है पुरूष प्रधान समाज मान मर्यादा की आड में सदा इसे दबाकर रखना चाहा कभी घर की इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अन्दर कैद रखा, यही परम्परागत पितृसत्तात्मक बेड़ियो को लांघने की लड़ाई है हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श इतिहास का अध्ययन एक नवीन दृष्टि के साथ पाठकों में समझ रखता है।

सन्दर्भ ग्रंथ–

1. अनामिका, स्त्री-विमर्श के औज़ार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली **2004**
2. प्रभा खेतान, औरत की खुदमुख्तारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली **2005**
3. सुधा अरोड़ा, आलोचना के स्त्री पक्ष, साहित्य उपक्रम, मुंबई **2008**
4. रमणिका गुप्ता, दलित स्त्रीवाद, रमणिका फाउंडेशन, दिल्ली **2010**
5. मैत्रेयी पुष्पा, चाक, राजकमल प्रकाशन **2003**

6. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते शब्द, आधार प्रकाशन **2010**
7. डॉ. रेखा अवस्थी, भारतीय नारीवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, वाणी प्रकाशन **2011**
8. सुधा अरोड़ा (संपा.), हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श, हिन्द युग्म **2013**
9. मन्नू भंडारी, आपका बंटी, राजकमल प्रकाशन **1971**
10. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन **1942**

अंतरराष्ट्रीय संदर्भ (अंग्रेज़ी में)

1. Simone de Beauvoir, The Second Sex, Vintage Books, 1949 (Eng: 1989)
2. Virginia Woolf, A Room of One's Own, Hogarth Press, 1929
3. bell hooks Feminist Theory: From Margin to Center, South End Press, 1984
4. Germaine Greer, The Female Eunuch, Harper Perennial, 1970
5. Shulamith Firestone, The Dialectic of Sex, William Morrow & Co., 1970
6. Mary Wollstonecraft, A Vindication of the Rights of Woman, J. Johnson, 1792
7. Stefan Zweig, Twenty-Four Hours in the Life of a Woman, Viking Press, 1927

प्रासंगिक पत्रिकाएँ और जर्नल्स

1. हंस, हंस प्रकाशन, राजेंद्र यादव द्वारा, 1986
2. कथादेश, कथादेश प्रकाशन, 1990
3. स्त्रीकाल, स्वतंत्र स्त्रीवादी ऑनलाइन पत्रिका, 2012
4. Feminist Review, Sage Publications, 1979
5. Signs: Journal of Women in Culture and Society, University of Chicago Press, 1975